Vol 7 Issue 1 Oct. 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

रीतिमुक्त काव्यधारा में लोकसंस्कृति का चित्रण

मनजीत कौर
पीएच.डी. शोधार्थी ,
भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशवारी विभाग ,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

प्रस्तावना–

हिन्दी साहित्य के इतिहास क्रम में विक्रमी संवत् 1700–1900 तक के काल को 'रीतिकाल' अथवा 'मध्यकाल' के नाम से अभिहित किया गया है। रीतिकाल की स्थिति पूर्ववर्ती और समकालीन साहित्य परम्पराओं से अनुस्युत है। तदयुगीन साहित्य के लिए जो मानदण्ड स्थापित किए गए उनकी पृष्ठभूमि में एक सदीर्घ परम्परा मिलती है। वेद दर्शन, उपनिषद, पुराण सम्मत विचार तत्त्व, भाव एवं कथा सामग्री की हिन्दी काव्य में अवतारणा का श्रेय भक्तिकाल को है, परन्तु इनसे इतर जीवनोपयोगी एवं काव्योपयोगी संस्कृत साहित्य का मंथन दोहन एवं प्रतिफलन शेष था जिसकी पूर्ति रीतिकालीन कवियों तथा आचार्यों द्वारा हुई। रीतिकालीन काव्य का प्रेरणास्त्रोत जहां एक ओर गाथा सप्तशती एवं अमरूक शतक आदि ग्रन्थों को माना जा सकता है। इस युग के कवियों की प्रवृत्ति काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों, श्रृंगार–चित्रण आदि के रूप में विशेष देखी जा सकती है। इस युग के काव्य में श्रृंगार भावना का वर्णन नायिका भेद, नख–सिख, ऋतु वर्णन तथा बारहमासा आदि के रूप में किया गया है। इसके अतिरिक्त रीति निरूपण तथा श्रृंगार व्यंजना के साथ–साथ अन्य विषयों यथा– भक्ति, वीर, राज–प्रशस्ति, नीति उपदेश, प्रकृति–चित्रण, हास्य–विनोद आदि के निकष पर भी रीतिकालीन काव्य समृद्ध ठहरता है।

'रीति' शब्द की व्युत्पत्ति – 'रीति' शब्द की रचना संस्कृत भाषा के 'रीङ्' धातु के साथ 'क्तिन' प्रत्यय लगने से हुई है। ''रीति' शब्द का व्युत्पतिजन्य अर्थ है– क्षरण, परिपाटी, मार्ग, चलन, प्रणाली, पद्धति।''[1] 'रीति' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य वामन ने किया। आचार्य वामन ने रीति को काव्य की आत्मा बताया है। आचार्य वामन के अनुसार– 'रीति' का अर्थ है– विशिष्ट पदों की रचना और यह विशिष्टता गुणों के समावेश से होती है। 'रीति' शब्द का प्रयोग हिन्दी साहित्य में एक विशेष काव्य प्रवृत्ति के लिए हुआ है। हिन्दी साहित्य में रीतिकालीन आचार्यों ने रीति शब्द के अपने–अपने विचारानुसार अर्थ निकाले हैं। प्रमुख रीतिकालीन आचार्यों के मत निम्नलिखित हैं–

''केशवदास – समुझै बाला बालकहुँ वर्णन पंथ अगाध।
चिंतामणि – रीति सुभाषा कवित की बरनत बुध अनुसार।
भिखारीदास – काव्य की रीति सिखयो सुकवीन्ह सों।
देव– अपनी अपनी रीति के काव्य और कवि रीति।''[2]

रीतिकालीन काव्य के प्रकार – रीतिकाल में लिखित सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य का वर्णन अथवा विषय के अनुसार विभाजन पहली बार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रस्तुत किया। डॉ. रसाल ने शुक्ल जी के इतिहास के एक ही वर्ष बाद प्रकाशित अपने इतिहास में रीतिकाल के ग्यारह विभाग किए। आगे चलकर पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल का विभाजन दो वर्गों में किया– 1. रीतिबद्ध काव्यधारा, 2. रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्यधारा, 3. रीतिसिद्ध काव्यधारा। इसके अतिरिक्त श्रृंगारेतर काव्य को भी कई भागों में विभाजित किया जा सकता है, यथा– वीरकाव्य, नीतिकाव्य, सन्तकाव्य।

रीतिमुक्त काव्यधारा – रीतिकाल में रीतिमुक्त काव्यधारा वह थी जिसके अग्रदूत रसखान, आलम, बाद में घनानंद, बोधा ठाकुर, द्विजदेव आदि प्रेमोन्मत कवि। रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि अपनी उमंग पर थिरकने वाले कवि थे। ये किसी रीति या शास्त्र के बंधन को नहीं मानते थे। इन्होंने नायिका भेद अलंकार, रस, छंद आदि के ग्रन्थों से निरपेक्ष होकर तथा अनुभूति परक काव्य की रचना की। ये कवि प्रेम के चातक थे जिनका प्रेम विरह और पीड़ा में अपनी सार्थकता मानता था मिलन और भोग में नहीं। रीतिमुक्त का शाब्दिक अर्थ है– रीति से मुक्त।

रीतिमुक्त काव्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए रामचन्द्र वर्मा ने कहा है– ''रीतिकाल में किसी काव्यांग विशेष को लक्षणबद्ध करते हुए उसके उदारहणस्वरूप काव्य रचना की परम्परा–सी चल पड़ी थी जिसका निर्वाह करना प्रत्येक कवि के लिए अनिवार्य हो गया था। इस काव्य रचना की रीति से स्वयं को तटस्थ रखकर कहा जाता है। 'मुक्त' शब्द से तात्पर्य है– जो बंधन से छूट गया हो।''[3] इस प्रकार ये कवि उन्मुक्त भाव से काव्य रचना करते थे। रीतिमुक्त कवि किसी शास्त्रीय बंधन या परिपाटी में न बंधे इसी से इनके काव्य को रीतिमुक्त या स्वच्छंद काव्य भी कहा गया है। रीतिमुक्त कवि मनोवेगों के आधार पर काव्य रचना करते थे वहीं रीतिबद्ध कवि बाह्य प्रेम–व्यापार को वर्णित करते थे।

रीतिमुक्त कवियों ने कविता के माध्यम से अपने अंतर्मन को चित्रित किया है। इसलिए घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर की कविताएं आंतरिक भावों को अभिव्यक्त करती हैं। आचार्य रामचन्द्र

शुक्ल ने रीतिमुक्त कवियों के बारे में अपने मंतव्य प्रकट करते हुए कहा है कि ''इन्हें कोई बन्धन नहीं था। जिस भाव की कविता जिस समय सूझी ये लिखे गए।''[4] स्पष्टतः रीतिमुक्त काव्यधारा साहित्यिक बंधनों को छोड़कर की गई रचना है। जिस समय कवि अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन हेतु काव्यशास्त्रीय नियमों के प्रति अत्याधिक न्यामोह से ग्रस्थ थे, उस समय उन बंधनों को त्यागकर मुक्त भाव से काव्य रचना करने की चेष्टा करके इन कवियों अत्यधिक साहस का परिचय दिया। तभी तो रीतिमुक्त काव्य आलोच्य युग का मुख्य काव्य कहलाता है।

रीतिमुक्त काव्य में लोक संस्कृति का चित्रण –जिस प्रकार अंग्रेजी के 'फोक' के आधार पर हिन्दी में 'लोक' शब्द बना है। उसी प्रकार अंग्रेजी के 'फोकलोर' शब्द के लिए हिन्दी में अनेक शब्द प्रचलित हुए हैं जिनमें 'लोक–संस्कृति' भी एक है। लोकसंस्कृति से लोकमानस में प्रचलित रीति–रिवाजों, टोने–टोटकों एवं विश्वासों के अभिव्यक्त होने का पता चलता है। वैदिककाल से ही भारत में संस्कृति की दो पृथक् धाराएं प्रवाहित होती रही थी– 1. शिष्ट संस्कृति, 2. लोक संस्कृति। इसी आधार पर दो प्रकार के साहित्य का निर्माण हुआ। शिष्ट संस्कृति से हमारा तात्पर्य उस अभिजात वर्ग की संस्कृति से है जो बौद्धिक विकास के उच्चतम शिखर पर पहुंचा हुआ था, जो अपनी प्रतिभा के कारण समाज का अग्रणी और पथ–प्रदर्शक था तथा किया है जहां उनका स्मरण उनके वर्ण विषय के लिए आवश्यक और उनकी रुचि के अनुकूल था। स्वतन्त्र रूप से संस्कारों का विवरण रीतिमुक्त कवियों काव्य में प्राप्त नहीं होता।

पर्वोत्सव – लोक जीवन में तीज–त्यौहारों और पर्वों–उत्सवों का विशेष महत्त्व होता है। इन तीज–त्यौहारों में लोकसंस्कृति का संवेग दर्शन होता है। ये लोकजीवन की रीति–नीति, धर्म–कर्म, हर्ष–आनंद–मिलन एवं आस्था और विश्वास के वाहक होते हैं। जिन तिथियों में स्नानादि कर्म सम्पन्न होते हैं, वे पर्व कहलाते हैं। जिनमें आमोद–प्रमोद और हर्षोल्लास व्यक्त किया जाता है, वे उत्सव कहे जाते हैं। रीतिकाव्य में होली की उन्मुक्ति और वसन्तोत्सव के रसरंग का वर्णन अधिक है, किन्तु रीतिमुक्त काव्य में केवल होली और वसंतोत्सवों की अधिकता नहीं है बल्कि भारतीय लोक में प्रचलित अन्य त्यौहारों का चित्रण भी हुआ है। इससे स्पष्ट है कि रीतिमुक्त काव्य शास्त्रीय बंधनों से मुक्त था। तभी तो उनके काव्य में लोकानुभूति की सच्ची अभिव्यक्ति हुई है। रीतिमुक्त काव्य में वर्णित पर्वो, उत्सवों एवं त्यौहारों का वर्णन निम्नलिखित है–

अक्षय तृतीय – यह नित्य लीला उत्सव है। इस अवसर पर सम्पूर्ण शरीर पर चंदन के प्रलेप का विशेष महात्म्य दिखलाई पड़ता है। इस उत्सव का रीतिमुक्त कवि बोधा और ठाकुर दोनों ने वर्णन किया है। रीतिमुक्त कवि ठाकुर अक्षय तृतीया का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

''अरवती की तीज तजबीज के सहेलीजुरी।
बर के निकट ठाठीं भावते को घेर की।''[5]

जिसकी संस्कृति का स्त्रोत, वेद या शास्त्र थे। लोकसंस्कृति से हमारा तात्पर्य जनसाधारण की उस संस्कृति से है जो अपनी प्रेरणा लोक से प्राप्त करती थी। जिसकी उत्स भूमि जनता थी और जो बौद्धिक विकास के निम्न धरातल पर उपस्थित थी। वैदिककाल की शिष्ट संस्कृति और लोकसंस्कृति का स्वरूप ऋग्वेद और अथर्ववेद में देखने को मिलता है। ऋग्वेद में अभिव्यक्त विचारों का धरातल उच्चस्तरीय होने के कारण शिष्ट जनजीवन से सम्बन्धित है और शिष्ट संस्कृति का प्रतिनिधि है, जबकि अथर्ववेद में अभिव्यक्त विचारों का धरातल सामान्य जनजीवन से सम्बद्ध है और लोकसंस्कृति का प्रतिनिधि है। किसी देश के धार्मिक विश्वासों, अनुष्ठानों तथा क्रियाकलापों के पूर्ण परिचय के लिए दोनों संस्कृतियों में परस्पर सहयोग अपेक्षित रहता है। अतः शिष्ट संस्कृति और लोकसंस्कृति दोनों एक सिक्के के दो पहलु हैं। ये आपस में एक–दूसरे से परस्पर प्रगाढ़ रूप से जुड़े हुए हैं। रीतिमुक्त, कवियों ने भयंकर विलास, वैभव के युग में भी कविता के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जिंदा रखने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है। रीतिमुक्त काव्य में भारतीय लोकमानस की मनोदशा को उजागर करने वाले बहुत सारे रीति–रिवाजों का आलम, घनानंद, बोधा, ठाकुर आदि के काव्य में विशद् वर्णन हुआ है तो दूसरी ओर द्विजदेव के काव्य में भी लोकसंस्कृति की झलक बसंत ऋतु आदि के चित्रण में दिखाई पड़ती है। रीतिमुक्त काव्यधारा में हमें जो लोकसंस्कृति का चित्रण देखने को मिलता है, वह निम्नलिखित है–

संस्कार– रीतिमुक्त काव्य में हमें सोलह संस्कारों में से प्रत्येक का सविस्तार उल्लेख प्राप्त नहीं होता। कवियों ने संस्कारों का उल्लेख वहीं

तीज – श्रावणमास में शुक्लपक्ष की तीज को मनाया जाने वाला यह उत्सव लड़कियों और स्त्रियों का उत्सव है। इस अवसर पर वे मल्हार गाती हुई हिड़ोरा झूलती हें। कवि द्विजदेव ने भी सावनी तीज का वर्णन किया है–

''सावनी के ब्याज आज आई गाँव गाँव तैं
भावन तैं लीन्है धरी करन प्रसून की।''[6]

रीतिमुक्त कवि घनानंद ने काव्य में भी तीज का वर्णन मिलाता है– ''हिलि मिलि खेलैं गोपकुमारी सावन तीज तिनमैं श्रीराधामुकुटमनि।''[7]

जन्माष्टमी – यह उत्सव कृष्ण जन्मलीला के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व को प्रायः सम्पूर्ण भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कवि घनानंद ने कृष्ण जन्माष्टमी का वर्णन बड़े मनोयोगपूर्ण ढंग से किया है–

''बलिहारी गोकुलचंद की।
भादो अग्ध राति आठैं तिथि प्रगढनिज्योति अमंद की।'' [8]

इस प्रकार रीतिमुक्त काव्य में कृष्ण जन्माष्टमी का भावपूर्ण शब्दों का चित्रण हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि तत्कालीन लोकमानस में अष्टमी को व्रत के रूप में मनाया जाता था।

नवरात्रि देवी पूजा – यह अवतार लीला का उत्सव है। इससे नवरात्र दुर्गा पूजा या केवल पूजा भी कहते हैं। ग्रामीण भाषा में इसे न्यौराती भी कहा जाता है।

यह उत्सव समस्त आर्य प्रदेश में प्रचलित है। यह उत्सव बंगाल, असम, उड़ीसा बिहार में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। घनानंद के काव्य में कहीं–कहीं देवी पूजा का वर्णन मिलता है–

''देबी पूजि पूजि बर पायौ
चीर चोर चित चोर और को सरबसु दै आपनायौ।'' [9]

लोक त्यौहार

रक्षा बंधन – रीतिमुक्त काव्यधारा के सभी कवियों ने रक्षाबंधन के त्यौहार का वर्णन अपने काव्य में किया है। रीतिमुक्त कवि ठाकुर के काव्य में रक्षाबंधन त्यौहार का वर्णन मिलता है। ठाकुरदास ने लड़कों को रक्षाबंधन एवं लड़कियों की कजलियां बांधने का उल्लेख किया है। इस अवसर पर सभी सखियां सजधजकर रक्षाबंधन का त्यौहार मनाती है। वे सभी मिलकर कजली के गीत गाती है–

''रंग भरे राघरे उमंगन सो गैहों मैं
देरित रक्षाबन्धन गोबिंद जू के हाथ साथ
राधे के कजलियाँ सिरावन की जैहौं मैं।।'' [10]

दीपावली – दीपावली मुख्य रूप से वैश्यों का त्यौहार माना जाता है। वर्षा ऋतु के अन्त में अन्त के घर में आ जाने पर समाज का उल्लास दीवाली के रूप में गुणात्मक हो जाता है। रीतिमुक्त कवि बोधा ने अपने 'विरहवारीश' में इस त्यौहार का वर्णन किया है–

''देवैं दिया आकास को गृह बारि दीपक पूरि।
गावैं सुदीपक राग बाला सजे भूषन भूरि।'' [11]

दीपावली से सम्बन्धित पद्यों की रचना कवि घनानंद ने भी अपने काव्य में की है–

''दियरा जगाय जागैं पाद तिय रागैं।
हियरा जगाय हम जोगहि जगावही।'' [12]

रीतिमुक्त कवि घनानंद ने दीपावली के त्यौहार पर होने वाली कुप्रवृत्तियों का भी वर्णन किया हैं रीतिमुक्त काव्य में दीपावली जैसे लोकपर्व का भी वर्णन हुआ है जो कि इस बात का द्योतक है कि ये दरबारी ही नहीं बल्कि अपने लोक की भी जानकारी रखते थे।

होली – होली और वसंत के त्यौहार भारतीय लोकजीवन में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। वसंतोत्सव का उल्लसा साकार रूप ग्रहण करके होली के रूप में फूट पड़ता है। रीतिमुक्त काव्य में फाल्गुनोत्सव अथवा होली का जितना विशद् एवं जीवंत चित्रण हुआ। अन्यत्र कदाचित नहीं मिलेगा। रीतिमुक्त कवियों में कवि घनानंद ने होली का वर्णन बड़े विशद् रूप में किया है। कवि होली का उन्मुक्त रूप में चित्रण करते हुए कहता है कि सुन्दर रंग से पिचकारी भरी हुई है। डफली के ढंग का बाजा बज रहा है, साथ में और भी कई वाद्य यन्त्र बज रहे हैं। फाग के रंग में सराबोर ब्रजनारियां गा रही हैं–

''गावति है ब्रजनारि फाग रंग बोरियाँ।
आनंद जीवन ज्यान सु हो ही होरियाँ।। [13]

इस प्रकार कवि घनानंद ने अपने काव्य में लोक त्यौहार होली का संजीव व उत्कृष्ट वर्णन किया। आलम के काव्य में होली का वर्णन नहीं के बराबर है। कवि बोधा के काव्य में होली का वर्णन मिलता है, एक प्द्य देखिए–

''बीन मृदंग झाँझा सनकावै। नायि गाय सब लोग हँसवैं।'' [14]

कवि ठाकुर ने होली का अपने काव्य में अनेक स्थलों पर बड़ा ही सजीव वर्णन किया है–

''फागुन के औसर अनोखे बनि बानिक हवै।
होरी लाल होरी लाल होरी लाल होरी हैं।।'' [15]

कवि द्विजदेव के काव्य में भी होली खेलने का वर्णन मिलता है। राधा और कृष्ण के होली खेलने का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है–

''कबहुंक फगुन माह दोऊ फगुआ मिलि खेलहिं।'' [16]

इस प्रकार रीतिमुक्त काव्यधारा के मुख्य कवियों द्वारा रचित काव्य में होली का विशद् चित्रण हुआ है।

लोकजीवन पद्धति – लोकतलों के विवेचन में तत्कालीन जीवन पद्धति का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। कारण यह है लोकसंस्कृति के तत्त्व, जीवनयापन के साधन एवं रीतियों का भी द्योतन करते हैं। लोक जीवन पद्धति से हमारा अभिप्राय समकालीन लोकजीवन में प्रचलित वस्त्राभूषण एवं खानपान की वस्तुओं के प्रयोग से है। रीतिमुक्त कवियों में बोधा, आलम, ठाकुर, घनानंद और द्विजदेव के काव्य में लोकजीवन की अनेकानेक भगिमाएं, दृश्यावली व लोक व्यवहार का सहज रूप में वर्णन किया है। लोकजीवन के अन्तर्गत हम वेश–विन्यास, वस्त्र–आभूषण, खानपान आदि का वर्णन करेंगे, जो कि निम्नलिखित हैं–

रीतिकालीन वेशभूषा – पूर्व मध्यकाल में जो वेशभूषा अधिक व्यापक और लोकप्रिय रही, वही रीतिकाल में प्रचलित रही। रीतिकालीन साहित्य और इतिहास प्रायः सामान्यजन की वेशभूषा के सम्बन्ध में मौन रहा। रीतिमुक्त काव्यधारा के कवियों ने अपने काव्य में सामान्य जन की वेशभूषा का वर्णन अपने काव्य में किया है। बालकों के वस्त्रों में कुलही, कुलहिया, कुलहि आदि बालकों की टोपी होती थी। कवि घनानंद ने बालक कृष्ण का मनोरम चित्रण प्रस्तुत किया है। कृष्ण सिर पर टोपी पहने हुए नंद की गोद में बैठे हैं–

''कुलही दै उलही स्याम रूप गोभा बैठै कान्ह ब्रजपति की गोद।'' [17]

रीतिकाव्य में पुरुषों के सिले तथा बिना सिले वस्त्रों के नामोल्लेख तो अवश्य मिलता है। उस समय पुरुष धोती, पैरों में जूती, सिर के वस्त्रों में पाग, तुर्ग, पगड़ी आदि मुख्य हैं। कवि बोधा कए पुरुष के वस्त्रों का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

''कटि पीत पर तुम देख। कहानी सुरंग बिसेख
गलबीय मुक्तामाल। पग पाउडी लहि लाल।'' [18]

रीतिमुक्त काव्य में वर्णित स्त्रियों की वेशभूषा विशेष आकर्षक मूलक है। स्त्रियां अपने वस्त्रों में लाल, नीले, पीले, हरे जैसे चमकीले तथा गहरे रंगों को विशेष रूप से पसंद किया है। उस समय घाघरा, साड़ी, कचुंकी और ओढनी स्त्रियों के प्रमुख वस्त्र थे। कवि आलम नायिका का दुलहन के रूप में सजी हुई का वर्णन करते हैं–

''केसरी कुसुम बरन पटझीने।
लाला चूनर उपर कीन्हें।।'' [19]

खानपान एवं भोजन व्यवस्था – खानपान जीवन की मुख्य आवश्यकता है। आहार की आवश्यकता पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्यों और पशुओं में समान है। रीतिकालीन कवियों की खानपान के वर्णन में कोई खास रुचि नहीं दिखाई, परन्तु रीतिकाल काव्यधारा के कवियों के काव्य में जरूर भोजन प्रयोग पद्धति के रूप में मिलता है। कवि बोधा ने माधव लीलावती के प्रसंग के माध्यम से अनेक खानपान की वस्तुओं का उल्लेख मिलता है। भोजन में भांति–भांति प्रकार के पकवानों का उल्लेख हुआ है–

''पुरी कचौरी बहुत तरकारी। ठेरी सब जननासे डारी
चारो पानी लकड़ी जोई। कनिकदार घृत सक्कर सोई।। [20]

कवि बोधा ने फुटका, फैनी, जलेबी, बर्फी, लड्डू, मिश्री और पेडा आदि मिष्ठानों का भी उल्लेख किया है–

''फुटका अरू फेनी जलेबी दई बरफीन को स्वादऊ ना।'' [21]

कवि द्विजदेव ने भी एक दो स्थानों पर खाद्य पदार्थों में मुख्य रूप से दूध, दही, मट्ठा ादि का उल्लेख किया है–

''पाले लिए दूध–दही–महीं जिन उधम ही तिन हूँ सौ लिवाने।'' [22]

कवि ठाकुर ने भी अपने काव्य में शाकाहारी भोजन का उल्लेख किया है। उन्होंने अपने काव्य के अन्तर्गत दूध, भात, खिचड़ी चक्करा, भाजी रोटी, बथुआ आदि खाद्य पदार्थों का उल्लेख किया है–

''छिपिया को दूध भात खिचरी हू करमा की
चक्करा रैदास जू चमार हूके खाए हैं।।'' [23]

अतः रीतिमुक्त कवियों के काव्य में जनमानस की भोज्य सामग्री का उल्लेख तो हुआ है, लेकिन वह अल्पमात्रा में ही है। हां, आलम ठाकुर, घनानंद, बोधा आदि के काव्य में सामान्य खानपान से सम्बन्धित कुछ चित्र अवश्य मिलते हैं।

लोक विश्वास – सामाजिक मान्यताएं एवं लोक विश्वास किसी भी युग विशेष के सांस्कृति व लोकजीवन के महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। प्रत्यक्ष रूप से किसी जाति के संगठन में जितना योग, प्रथाओं, मान्यताओं, रूढ़ियों और विश्वासों का हुआ करता है उतना अन्य शक्ति का नहीं। हमारे विश्वासों में अंधविश्वास, पुनर्जन्म, कर्मफल और भाग्यवाद प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कुछ विश्वास अन्य भी हैं जो शकुन–अपशकुन, टोना–टोटका, डिठौना के द्वारा लोकमानस की अभिव्यक्ति हुई है। वस्तुतः ये मान्यताएं एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से सम्बन्ध है। हिन्दू विश्वासों के अनुसार जीवन ईश्वर का अंश है और अविनाशी है। जीवन अपने कर्मानुसार विभिन्न योनियों में अवतरित होता रहता है। रीतिमुक्त कवियों के काव्य रचना क्षेत्र ब्रज क्षेत्र के लोकजीवन में व्याप्त विश्वासों का वर्णन हुआ है। परिणामस्वरूप रीतिमुक्त कवियों ने तात्कालिक विश्वासों, प्रथाओं, परम्परागत रूढ़ियों, मान्यताओं, सम्मोहन, जादू–टोना, ताबीज, भाग्य एवं डिठोना आदि लोक विश्वासों का आंकलन जिस पटुता के साथ किया है वह सर्वथा सत्य है। रीतिमुक्त कवियों की काव्य में तत्कालीन लोक जीवन में व्याप्त अवतार भावना का विशद वर्णन हुआ है। इन कवियों के परमाराध्य श्रीकृष्ण होने पर भी अन्य देवी–देवताओं को नकारा नहीं गया है। इन्होंने राम, शिव, गणेश आदि देवताओं का भी वर्णन किया है। देवताओं में विश्वास की अटूट आस्था को देखकर लगता है कि तदयुगीन लोकजीवन में भगवान के प्रति आस्तिक भाव था। इन कवियों ने विभिन्न देवी–देवताओं के वर्णन के माध्यम से समाज में विद्यमान विभिन्न देवों के प्रति भक्तिभाव को प्रकट किया है।

इसके अतिरिक्त लोकजीवन में व्याप्त अन्य पौराणिक प्रसंग सम्बन्धी विश्वास मान्यताओं आदि का भी रीतिमुक्त कवियों ने अपने काव्य में वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त रीतिमुक्त काव्य में नाना प्रकार के शकुन–अपशकुनों का वर्णन हुआ है। ये सभी विश्वासघृत होते हैं। लोकविश्वासों में शकुन–अपशकुन का भी अपना एक महत्त्व है। रीतिकालीन युग में भी शकुन अपशकुनों पर भी पूर्ण विश्वास किया जाता था। रीतिमुक्त काव्य में समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वास, भाग्यवाद, कर्मफल, जन्म–पुनर्जन्म, ग्रह–नक्षत्र एवं तिथि–विचार, ज्योतिष विचार आदि का भी वर्णन किया गया है।

अतः निष्कर्ष रूप में में कह सकते हैं कि लोकसंस्कृति किसी भी समाज की आधारभूत शिला होती है जिसके आधर पर जनसामान्य के अस्तित्व का विश्लेषण किया जा सकता है। रीतिमुक्त कवियों ने अपने काव्य में लोकसंस्कृति को प्रस्तुत करने वाले मानव–संस्कारों को भी स्थान दिया है। उनके काव्य में चित्रित लौकिक रीति–रिवाजों में सम्पूर्ण भारतीय लोकजीवन की झलक दिखाई पड़ती है। रीतिमुक्त काव्य में वर्णित संस्कारों के उत्सवों में चाहे वह जन्मोत्सव हो या विवाहोत्सव सभी अवसरों पर लोकजीवन के रीति–रिवाजों का अपने काव्य में बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। अन्तः यह कहा जा सकता है कि रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्य जनसामान्य की जीवनाभूति को प्रकट करने वाले लोकतत्त्वों, लोकसंस्कृति से सम्पन्न है।

संदर्भ –

1.'रीङ्' गताविति धातोः सा व्युत्पसा रीति रूच्यते। भोज, सरस्वती कण्ठाभरण, 2/27
2.हिन्दी साहित्य का इतिहास, सम्पादक डॉ. नगेन्द्र लोकभारती प्रकाशन, 2016, पृ. 294
3.संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, सम्पा. रामचन्द्र वर्मा, पृ. 8221
4.हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 297
5.ठाकुर ग्रंथावली, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
6.महाराजा मानसिंह द्विजदेव, मान मयंक, संग्रहकर्त्ता और सम्पादक, हरदयालु सिंह, छन्द, पृ. 195
7.घनानंद ग्रन्थावली, सम्पा. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 507
8.घनानंद ग्रन्थावली, पृ. 411, छंद 344
9.वही
10.ठाकुर ग्रन्थावली, पृ. 33, छंद 123
11.बोधा ग्रन्थावली, पृ. 211, छंद 11
12.घनानंद ग्रन्थावली, सुजानहित, पृ. 16, छंद 45
13.घनानंद ग्रन्थावली, पृ. 775, छंद 13
14.बोध ग्रन्थावली, पृ. 213, पृ. 33
15.ठाकुर ग्रन्थावली, पृ. 25, छंद 96

16.महाराज मान सिंह द्विजदेव, श्रृंगार लतिका सौरभ, छंद 84
17.घनानंद ग्रन्थावली, पृ. 450, छंद 518
18.बोध ग्रन्थावली, पृ. 48, छंद 52
19.आलम ग्रन्थावली, पृ. 50
20.बोधा ग्रन्थावली, छंद 35
21.बोधा ग्रन्थावली, इश्कनामा, पृ. 13, छंद 75
22.मान मयंक, छंद 139
23.ठाकुर ग्रन्थावली, पृ. 14, छंद 50

मनजीत कौर
पीएच.डी. शोधार्थी , भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशवारी विभाग , पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com